|| श्री कालभैरवाष्टकं ||

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पङ्कजं

व्यालयज्ञ सूत्रमिन्दु शेखरं कृपाकरम् ।

नारदादि योगिवृन्द वन्दितं दिगंबरं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटि भास्वरं भवाब्धि तारकं परं

नीलकण्ठ मीप्सितार्थ दायकं त्रिलोचनम् ।

कालकाल मंबुजाक्ष मक्षशूल मक्षरं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
२॥

शूलटंक पाश दण्डपाणि मादिकारणं

श्यामकाय मादिदेव मक्षरं निरामयम् ।

भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डवप्रियं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥

३॥

भुक्तिमुक्ति दायकं प्रशस्त चारुविग्रहं

भक्तवत्सलं स्थितं समस्त लोकविग्रहम् ।

विनिक्वणन् मनोज्ञहेमकिङ्किणील
सत्कटिं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्म मार्गनाशकं

कर्मपाश मोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।

स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभितांग मण्डलं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
५॥

रत्नपादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं

नित्यमद्वितीय मिष्टदैवतं निरंजनम् ।

मृत्युदर्प नाशनं कराल दंष्ट्रमोक्षदं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥

६॥

अट्टहास भिन्नपद्म जाण्डकोश संततिं

दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्र शासनम् ।

अष्टसिद्धि दायकं कपाल मालिकाधरं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥
७॥

भूतसंघ नायकं विशालकीर्ति दायकं

काशिवास लोकपुण्य पापशोधकं विभुम् ।

नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ८॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं

ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्यवर्धनम् ।

शोकमोह दैन्यलोभ कोपतापनाशनं

ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रि सन्निधिं ध्रुवम् ॥

(हाथ में जल लेकर यह मंत्र बोले और
जल थाली में अथवा भूमि पर छोड़ दें)

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचर्यस्य

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ

श्री कालभैरवाष्टकं श्री काल भैरव
प्रसन्नार्थे श्री काल भैरवार्पणमस्तु ॥